सारथी–नेहरू कला कुंज

प्रिय साथियों,

अपनी स्थापना के दिन से आज तक हर वर्ष 14 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर हम मिलते हैं तथा आज़ादी का जश्न मनाते हैं। इस वर्ष हमारे कार्यक्रम का मुख्य विषय है:-

''अभिलाषा और आज़ादी''

जब से कल-कारखाने बढ़े, रेडियो-टेलीविजन से प्रचार-प्रसार तेजी से बढ़ा, इस विकास की दौड़ ने हजारों पारम्परिक हुनरमन्दों के हाथ से काम छीन लिया है। इस दौड़ में कुछ गिने-चुने कलाकार तो आगे निकल गये, परन्तु अधिकतर कला-शिल्पी आज अपना पुश्तैनी धन्धा छोड़कर भुखमरी के कगार पर आ गये है। हाट, बाजार, मेलों आदि के माध्यम से सरकार एवं स्वयंसेवी संगठनों ने कुछ पारम्परिक कलाकारों को रोजगार देने की कोशिश तो की है, परन्तु ये प्रयास समुद्र में मोती चुनने के समान है। आज सरकार का यह प्रयास, कलाकार और कला जगत को सिर्फ दिखावे के तौर पर छू लेना ही काफी नहीं है, बल्कि इस वर्ग के हुनर को जिन्दा रखने के लिए एक राष्ट्रीय नीति बनाने की जरूरत है।

इन 25-30 वर्षों में एक पीढ़ी अपने को इस माहौल के साथ घसीटती रही। यदि नई पीढ़ी को इस नये माहौल में काम, जजमान, बाजार, तकनीकि आदि की पूर्ण जानकारी एवं साधन दिये जायें तो हर हुनरमंद अपनी क्षमता से इस दौड़ में घुल मिल सकेगा।

अधिकतर हुनरमन्द चाहे वह किसी भी फन से जुड़ा है आज ऐसे दमघोटू माहौल में रह-बस रहे हैं जहां पर उनकी कला बिखर गयी है-मन-मस्तिष्क और हाथ एक साथ क्वालिटी का काम नहीं कर पाते, इसी वजह से नई पीढ़ी अपने पैतृक धन्धे से मुंह मोड़ रही है। यदि समय रहते कलाकार को स्वेच्छा से अपने अनुरूप रहने-बसने की आज़ादी न दी गयी तो इस बिखराव को कोई भी समेट नहीं पायेगा, तथा कला के अन्त का लोगों को पता भी नहीं चलेगा।

आज वक्त आ गया है कि सभी पारम्परिक हुनरमंद खुद-ब-खुद एक ऐसा माहौल बनायें जो अपनी सृजन शक्ति के अनुरूप हों और आज का बाजार भी उसकी मांग करे। हर हुनरमन्द, देश के लिए प्रतिष्ठा का विषय रहा है, इसलिए आज भी अपने गौरव को बनाये रखने की पूरी सहूलियतें मिलनी चाहिएं।

इस एक वर्ष में सारथी द्वारा किये गये कार्यों का ब्यौरा निम्नलिखित हैं:-

- उड़ीसा सरकार के साथ इन्टेक के सहयोग से उड़ीसा की सांस्कृतिक विरासत को दीर्घ-गामी एवं बहुआयामी बनाने के उद्देश्य से एक विस्तृत योजना पर कार्य शुरु हो गया है। जिसमें प्रमुख हैं कलाश्री एवं कलाक्षेत्र योजना।
- **कलाश्री**–इस योजना का मुख्य उद्देश्य है उड़ीसा के हस्तशिल्प व कला को बचाये एवं बनाये रखने के लिए मांग के अनुरूप नये डिजायनों से उन्हीं विधाओं को बाजार में लाया जाये जिससे कि भविष्य में भी इनका उत्पादन होता रहे।
- **कलाक्षेत्र**–यह परियोजना गृह निर्माण से संबधित है। आनन्द ग्राम, नेहरू कलाकुंज, कलानेरी की तरह ही इस योजना में उड़ीसा के 400 कलाकार परिवारों को रहवास के साथ-काम बाजार एवं सभी सामान्य सुविधाओं का केन्द्र हो, जिसमें कला एवं कलाकार फल-फूल सके!
- पिछले वर्ष इण्डिया ट्रुडे के सहयोग से सारथी ने अयोध्या मुद्दे पर हिन्दी एवं अंग्रेजी में 'यह भूमि' पुस्तिका निकाली थी। इस वर्ष राजीव गांधी फांउण्डेशन ने इसी 'यह भूमि' पुस्तिका को उर्दू में निकाली है, जिससे कि सुझाव एवं समाधान अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचे।
- शादीपुर डिपो में रह बस रहे लोक-कलाकारों ने कलाकार ट्रस्ट के सहयोग से अपनी बहुद्देश्यीय सहकारी समितियां बना ली हैं। सारथी का हमेशा से यह प्रयास रहा है कि कलाकार कहीं पर भी रहे उनके साथ काम करना है।
- कलाकार ट्रस्ट के सहयोग से, डिस्पेन्सरी, बालवाड़ी, सजृनात्मक शिक्षा, सफाई कार्यक्रम, नशाबन्दी आदि कार्यक्रम कठपुतली कालोनी में बराबर चल रहे हैं।
- **अंकुर एवं बरगद** पुरस्कार सबसे पहले श्रीमती सोनियां गांधी जी के हाथों बच्चों एवं गुरूओं को दिये गये।
- **अंकुर** योजना के अन्तर्गत देश भर के 12 पारम्परिक कलाकार बच्चों को रु० 500/- प्रतिमाह का वजीफा दिया जा रहा है।
- **बरगद** योजना में 3 गुरूओं को रु० 2500/- प्रतिमाह का फैलोशिप दिया जा रहा है।
- अब हम, लोगों-विभिन्न संस्थाओं एवं व्यवसइयों से इस योजना को अपनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। जिससे कि अधिक कलाकारों को इसका लाभ मिले।